Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-1; Issue-1 (July-Sept.) 2025
Page No.- 08-12
©2025 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's :

पूजा शेखावत
सहायक आचार्य (वनस्पति विज्ञान),
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर.

Corresponding Author :

पूजा शेखावत
सहायक आचार्य (वनस्पति विज्ञान),
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर.

भारतीय ज्ञान परम्परा

शोध सार : प्राचीनकाल से भारत उच्च मानवीय मूल्यों व विशिष्ट ज्ञान व परम्पराओं का देश है। यह आध्यात्म और ज्ञान की भूमि है। पाश्चात्य सभ्यता के भौतिकवाद के विपरित भारतीय सभ्यता भावना और अपनत्व पर आधारित है। आज पश्चिमी सभ्यता भारतीय ज्ञान विज्ञान का अनुसरण कर भारतीय शास्त्रों, वेद, पुराण, उपनिषद आदि अनुसंधान करने लगी हैं भारत की परम्पराओं व ज्ञान को विश्व अपना रहा है। हमें हमारी परम्पराओं व संस्कृति को अनुसंधान की नई दृष्टि से देखने व समझने की आवश्यकता है। भारत में भूगोल, रसायन, आयुर्वेद, वास्तु, स्थापत्य, ज्योतिष आदि समस्त क्षेत्रों में मानव जाति के हित में अनुसंधान की बात कही है।

प्रस्तावना : (भारतीय ज्ञान का सामाजिक, साहित्यिक व शैक्षिक परिदृश्य) :

(i) सामाजिक परिदृश्य में भारतीय ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचरित होता आया है। भारत के संदर्भ में कहा जाता है. प्राचीन भारतीय समृद्धि और समरसता के मूल में प्राकृतिक संपदा, कृषि, व गोवंश थे। प्राकृतिक संपदा के रुप में हमारे पास नदियों के अक्षय भण्डार के रूप में शुद्ध और पवित्र जल स्त्रोत थे। नदियों के किनारे मानव सभ्यता व भारतीय संस्कृति विकसित हुई। आहार की उपलब्धता सुलभ हुई तो सृजन और चिंतन के पुरोधा सृष्टि के रहस्यों की तलाश में जुट गए भारतीय ज्ञान को संवृद्धित करने के लिए ऋषि, मुनियो ने नए-नए प्रयोग किए। भारतीय ज्ञान परम्परा में सामाजिक परिदृश्य के अनुसार संपूर्ण विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को मानने पर जोर दिया गया है। सामाजिक संस्थानों के रिमों के पालन को अनिवार्य कहा गया है। सामाजिक संस्थानों के अन्तर्गत्त घर परिवार के अलावा नाते-रिश्तेदार, विवाह नियम, धार्मिक विधि विधान जाति व्यवस्था, वर्णाश्रम व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, राजनीतिक व आर्थिक संरचना, विभिन्न विविधताओं में सामंजस्य की भावना इत्यादि का अध्ययन किया जाता

हैं।

(ii) भारतीय ज्ञान परम्परा का साहित्यिक परिदृश्यः भारतीय प्रामाणिक लिखित ज्ञान परम्परा क्रमशः वेद, उपनिषद, सहिता, दर्शनशास्त्र से लेकर संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश और वर्तमान हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य से लेकर तक चली आ रही है। इनकी रचना जीवनोपयोगी शोध का परिणाम है। शोध के लिए जिज्ञासा प्रथम शर्त है। वेदों मे ब्रह्माण्ड के प्रत्ति यह जिज्ञासामूलक भाव सर्वत्र दृष्टिगोचर है उपनिषद वेदगथों के सूक्तों की व्याख्या के रूप में निर्मित हुए है चार वेद ग्रंथों के व्याख्यात्मक, विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध का परिणाम अठारह उपनिषद, श्रुतियाँ व स्मृतियाँ है। संपूर्ण वैदिक साहित्य प्रकृति के रहस्यों को अनावृत करने के प्रयास में सृजित है। वैदिक साहित्य के शब्दों की व्याख्या व उत्पत्ति की चर्चा करने ग्रंथ निघण्टु' भारतीय ज्ञान की अन्वेषणात्मक प्रतिभा के नमूने है। इसके रचनाकारों ने वेद के एक-2 शब्द को प्रकृति प्रत्यय, मूल धातु, अर्थ, भाव आदि के संदर्भ में विश्लेषित किया है। वैदिक संस्कृति के बाद लौकिक संस्कृत की धारा प्रवाहित होती है। भारतीय भाषा को सुदृढ़ करने के दृष्टिकोण से पाणिनी के ग्रंथ अष्टाध्यायी का सृजन हुआ। ईसा पूर्व तीसरी शती में आचार्य भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र' शीर्षक ग्रंथ की रचना की, इसमें नाटक के साहित्य के साथ अन्य कलाओं का भी ज्ञान प्राप्त होता है।

(iii) भारतीय ज्ञान परम्परा का शैक्षिक परिदश्यः- भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय संस्कृति के अलग-अलग काल खंड से प्राप्त अद्वितीय ज्ञान एवं प्रज्ञा का द्योतक हैंद्य इस ज्ञान परम्परा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन, ज्योतिष विद्या, कर्म, धर्म, त्याग, भोग, तपस्या, लौकिक एवं पारलौकिक सभी प्रकार के अद्भुत ज्ञान का संगम हैं। भारतीय ग्रन्थों में इसका विस्तारित रूप देखा जा सकता हैं। पुराण, वेद, वेदांग, वांगमय, रामायण, ब्राह्मणग्रन्थ आदि विद्या को मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ अंग स्वीकार करते हुए मनुष्य को ज्ञानवान बनाने का प्रयास करते रहे हैं। प्राचीन काल की गुरुकुल पद्धति इन्हीं ग्रंथो के अधीन थी। जिसके अंतर्गत गुरु अपने शिष्य को श्रुति-ज्ञान के माध्यम से पारंगत करने की कोशिश करता है। इसके द्वारा ही बालक के नैतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, तार्किक गुणों को विकसित किया जाता था। प्रारम्भ से ही बच्चों को मनुष्य, प्राणी एवं प्रकृति के मध्य सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाये रखने की सीख दी जाती थी। इतना ही नहीं शिक्षण के माध्यम से बच्चों को वेदों को पढ़ने, उनका अनुपालन एवं अनुशीलन करने की शिक्षा दी जाती थी, जिसका प्रभाव उनके दैनंदनी जीवन पर भी पड़ता था। जिससे बालक समाज एवं अपने परिवार के प्रति कर्तव्यपरायण एवं जिम्मेदार बनते थे, इस प्रकार जीवन सम्बन्धी सभी मूल पक्ष इस काल की शिक्षा प्रणाली में उपस्थित थे। इस शिक्षा व्यवस्था ने अधिगम एवं शारीरिक विकास दोनों पक्षों पर ध्यान केन्द्रित किया। जैसा कि विष्णु पुराण में भी कहा गया हैं कि, कर्म वही हैं जो बंधन से मुक्त करे तथा शिक्षा (विद्या) वही जो मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें शेष कर्म निपूर्णता प्रदान करने का कार्य करते हैं। शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय शिक्षा व्यवस्था ने अंगीकार करते हुए सभी मठ, गुरुकुल, विश्वविद्यालय, मंदिर, पाठशाला एवं अन्य यदा-कदा शिक्षण संस्थान में स्वदेशी शिक्षा देना प्रारम्भ किया था। इन सभी संस्थानों में शिक्षण का मुख्य स्रोत मौखिक था। आदिकालीन शिक्षा प्रणाली अर्वाचीन ज्ञान, विज्ञान, प्रकृति प्रेम, मानवता को प्रोत्साहन प्रदान करने वाली थी। ब्राह्मण पुराण में भी ज्ञान को अप्रतिम माना गया हैं जो मनुष्य को सृजनशील बनाता हैं। इन्ही ज्ञानरुपी स्वरूपों का विस्तार भारत नालान्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, उज्जैयिनी, काशी, वल्लभी आदि विश्वविद्यालयों द्वारा किया जाता था। जिसमें भारत के ही नहीं अपितु पास पड़ोस देश के शिक्षार्थी एवं शोधार्थी ज्ञान प्राप्त करते थे। गार्गी अपाला, ऋतम्भरा, मैत्रीय लोपमुद्रा आदि विदुषी महिलाओं ने भी भारतीय ज्ञान परम्परा में अपना अमिट योगदान दिया हैं। वहीं चरक, कात्यायन, आर्यभट्ट, शंकराचार्य, विवेकानंद, महात्मा गांधी, वराहमिहिर, कणाद आदि ने अपनी मेधा से भारत भूमि को धन्य किया हैंद्य त्याग, वृत्तिसपन्न, लोभ रूपी तृष्णा से परे व्यक्ति को ही पुराणों में गुरु माना गया हैं। वहीं गुरु की श्रेष्ठता का बखान करते हुए

वायुपुराण में वर्णित किया गया हैं कि सभी तीर्थों में सबसे श्रेयकर तीर्थ गुरु रूपी तीर्थ हैं जहाँ से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता हैं। अतः भारतीय ज्ञान परम्परा मनुष्य को पशुता रूपी जीवन से मुक्त करते हुए मनुष्य अमृतपान कराता हैं इसे शिक्षा व्यवस्था से दूर करना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर हैं।

- आज की शिक्षा नीति 2020 में IKS (भारतीय ज्ञान परम्परा) को सम्मिलित करके हमारी शिक्षानीति को और अधिक सुदृढ़ बनाने पर ध्यान दिया गया है। वर्तमान में विभिन्न संस्थाएँ इनके आधार पर कार्य कर रही है जैसे:-

(i) आकिके सिद्धार योगम रिसर्च ट्रस्ट ने श्री बालाजी विद्यापीठ के साथ एमआयू साइन किया। इसमें
भारतीय ज्ञान प्रणालियों को समकालीन शिक्षण, प्रशिक्षण व अनुसंधान में एकीकृत करने के लिए आकिचे सिद्धर योग मीथाथवा रिसर्च ट्रस्ट व एसबीवी (पुडुचेरी) ने एमओयू साइन किया जिससे भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित समग्र स्वास्थ्य व कल्याण पर ध्यान केंद्रित किया जा सके।

(ii) सिंद्धाता नॉलेज फांउडेशन व महार्षि पाणिणी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय ने मध्यप्रदेश ने 5
साल का एमओयू साइन किया है। यह एमओयू संस्कृत को ज्ञान व उसके क्षेत्रों का भारतीय ज्ञान परम्परा में योगदान से संबंधित है।

(iii) देश भर में 1,000 से अधिक विश्वविद्यालय शिक्षकों की भारतीय परंपराओं, संस्कृति और जीवन शैली
की व्यावहारिक समझ से लैस किया जा रहा है, ताकि वे अगले शैक्षणिक सत्र से स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर प्रासंगिक पाठयक्रम पढ़ा सकें। शिक्षा मंत्रालय के भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) प्रभाग के सूत्रों ने द हिंदू को बताया कि यह प्रशिक्षण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजना को ध्यान में रखते हुए दिया जा रहा है, जिसके तहत देश भर के विश्वविद्यालयों में यूजी और पीजी दोनों कार्यक्रमों के पहले वर्षों में भारतीय संस्कृति और परंपराओं का अवलोकन देने वाले दो क्रेडिट पाठयक्रम शुरु किए जाने हैं।

(iv) यूजीसी का इरादा अगले दो वर्षों में आईकेएस में 15 लाख शिक्षकों को प्रशिक्षित करना है। मुख्य रूप से जिन क्षेत्रों को कवर किया जा रहा है, वे हैं प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों की परम्परा, दृष्टि और लौकिक प्रयोग (आधुनिक प्रासंगिकता)। छह दिवसीय प्रशिक्षण को चार भागों में विभाजित किया गया है।

पहले भाग में विषय का अवलोकन शामिल है, जिसमें 14वीं शताब्दी से पहले के वैदिक ग्रंथों का परिचय शामिल है, इसके बाद भारतीय ज्ञान परम्परा के दार्शनिक आधार जैसे दर्शन शास्त्र (वैदिक दर्शन) शामिल हैं। तीसरे भाग में शब्दावली पाठ शामिल किए जाएँगे, जिसमें ऐसे शब्द शामिल होंगे जिनका अनुवाद नहीं किया जा सकता है, जैसे कर्म और धर्म। चौथे और संभवतः सबसे महत्वपूर्ण भाग में, शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा पढ़ाने के तरीकों में प्रशिक्षित किया जा रहा है, जैसे तंत्र युक्ति, जो एक शोध पद्धति और नवीन शिक्षाशास्त्र है।

(v) यूजीसी का यह निर्णय राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुरूप है, जिसमें निर्देश दिया गया है कि प्राचीन भारत से प्राप्त ज्ञान और उसके योगदान को ध्यान में रखा जाना चाहिए। यूजीसी का यह निर्णय राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुरूप है, जिसमें निर्देश दिया गया था कि प्राचीन भारत से प्राप्त ज्ञान और आधुनिक भारत में इसके योगदान को पाठयक्रम का हिस्सा होना चाहिए। इसने यह भी सुझाव दिया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को वैकल्पिक विषय के रूप में भारतीय ज्ञान परम्परा पर एक "आकर्षक पाठयक्रम" पेश किया जाना चाहिए। नीति में कहा गया है, "मजेदार और स्वदेशी खेलों के माध्यम से विभिन्न विषयों और विषयों को सीखने के लिए स्कूलों में प्रतियोगिताएं आयोजित की जा सकती हैं।"

(vi) शिक्षा मंत्रालय के तहत भारतीय ज्ञान परम्परा सेल की स्थापना भारतीय ज्ञान परम्परा के सभी पहलुओं पर अंतः विषय अनुसंधान को बढ़ावा देने और आगे के अनुसंधान और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए इसे संरक्षित और प्रसारित

करने के लिए की गई है। इसने जुलाई में देश भर के विश्वविद्यालयों के संकाय सदस्यों को प्रशिक्षित करना शुरू किया, और अक्टूबर के अंत तक समाप्त होने की उम्मीद है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम छह शहरों नागपुर, चेन्नई, वाराणसी, श्रीनगर, गुवाहाटी और दिल्ली में आयोजित किए जा रहे हैं-जिनमें से प्रत्येक आसपास के राज्यों को कवर करता है। पहले चार शहरों में प्रशिक्षण सत्र पहले ही समाप्त हो चुके हैं, और इस महीने के अंत में गुवाहाटी और दिल्ली में आयोजित किए जाएंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा समन्वयक अनुराग देशपांडे ने कहा, "हमने प्रत्येक केंद्र पर प्रशिक्षित होने के लिए 180 शिक्षकों को पंजीकृत किया है", उन्होंने कहा कि संकाय सदस्य सहायक और एसोसिएट प्रोफेसर के पदों पर हैं।

"विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का लक्ष्य अगले दो वर्षों में 15 लाख शिक्षकों को प्रशिक्षित करना है। हम इस महीने के अंत में मालवीय मिशन के शुभारंभ के साथ इस लक्ष्य को प्राप्त करेंगे," यूजीसी के अध्यक्ष एम. जगदीश कुमार ने कहा। "इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से, हम भारतीय ज्ञान प्रणालियों की सीमाओं को भी दूर कर रहे हैं। हम प्रशिक्षण कार्यक्रम में यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि आईकेएस निरंतर ज्ञान परंपराओं और भारत के ज्ञान से सीखने के बारे में है ताकि एक महत्वाकांक्षी भारत का निर्माण किया जा सके," उन्होंने कहा।

(vii) यूजीसी के सूत्रों ने कहा कि आईकेएस सेल को 40 अधिक विषय विशिष्ट पाठ्यक्रम बनाने का काम सौंपा गया है। आयोग छात्रों को उनके अनुभव और विशेषज्ञता प्रदान करने के लिए मुख्यधारा के शिक्षाविदों से औपचारिक रूप से जुड़े नहीं विभिन्न धाराओं के कलाकारों और विशेषज्ञों को शामिल करने की भी योजना बना रहा है।

(viii) यदि भारतीय ज्ञान प्रणालियों का अध्ययन करने का विचार समकालीन विषयों से परे जाकर भारत में स्वदेशी चीज़ों को रिकॉर्ड करना, उनकी सराहना करना और शोध करना है, तो स्वदेशी चीज़ों को समझने के लिए इतिहास के पेंडुलम को अतीत में वापस जाने की आवश्यकता हो सकती है। विशेषज्ञ बताते हैं कि आज जिस भारतीय ज्ञान प्रणाली की कल्पना की जाती है, वह पहले की आदिवासी संस्कृतियों से ली गई है।

कई विद्वान भारतीय ज्ञान प्रणाली के भीतर एक ऐसा स्थान तलाश रहे हैं जो उन आदिवासी संस्कृतियों का अध्ययन और दस्तावेज़ीकरण करेगा जिनका अध्ययन नहीं किया गया है ताकि प्रागैतिहासिक काल से ज्ञान को उजागर किया जा सके। तिरुनेलवेली में मनोनमनियम सुंदरनार विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने प्राचीन कानी जनजाति के रहस्यों को उजागर करने के लिए एक ऐसी परियोजना शुरू की है जो तमिलनाडु और केरल के पश्चिमी घाटों में जीवित है।

(ix) एक अधिकारी ने बताया कि सरकार जल्द ही IKS Wiki नाम से एक ऑनलाइन रिपोजिटरी बनाएगी, जो भारत के पारंपरिक ज्ञान और संस्कृति से जुड़े विषयों पर आम जनता को जानकारी उपलब्ध कराएगी। इसमें इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों को भी शामिल किया जाएगा, ताकि वे इसमें योगदान दे सकें और इससे जुड़ सकें। निश्चित रूप से, विकिपीडिया, दुनिया का सबसे बड़ा मुफ़्त ऑनलाइन विश्वकोश, भारतीय सभ्यता, धर्म, दर्शन और संस्कृति पर व्यापक प्रविष्टियाँ रखता है। ऐसे अन्य भंडार भी हैं, जैसे भारतपीडिया, जिसे एक निजी संस्था द्वारा क्यूरेट किया जाता है। हालाँकि, भारतीय ज्ञान परम्परा विकी पहली ऐसी राज्य-प्रायोजित पहल होगी। इंटर्नशिप के दौरान छात्र चित्र, रेखाचित्र, मल्टीमीडिया, कार्टून, ग्राफिक्स सहित कलाकृति के रूप में भी योगदान दे सकते हैं, जिसका उपयोग आईकेएस समुदाय और आम पाठकों द्वारा किया जा सकता है, इस सप्ताह की शुरुआत में जारी एक दस्तावेज में विभाग ने कहा, जिसमें भारत की परंपराओं को प्राथमिकता दी जाएगी। आईकेएस इंटर्नशिप कार्यक्रम युवाओं को आईकेएस से संबंधित विभिन्न विषयों का गहन अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करने और उत्साहित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, अधिमानतः भारतीय भाषाओं में। आईकेएस विकि इसके लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण होना

चाहिए, "दस्तावेज में कहा गया है। "इसलिए, इस इंटर्नशिप कार्यक्रम का फोकस छात्रों के लिए योगदान करने और गर्मी की छुट्टियों के दौरान या वर्ष के दौरान किसी भी समय आईकेएस विकि के विकास में शामिल होने के अवसर पैदा करना है।" इस परियोजना के तहत, केवल व्यवस्थित ज्ञान से संबंधित विषय ही स्वीकार किए जाएंगे जो भारतीय उपमहाद्वीप में हजारों वर्षों से भारतीयों द्वारा बनाए गए हैं और मौखिक परंपराओं, पांडुलिपियों, ग्रंथों और पारंपरिक प्रथाओं के माध्यम से प्रसारित किए गए है।

निष्कर्ष : भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान की उत्पत्ति, ज्ञानार्जन और ज्ञानोपभोग तीनों ही चरणों में शोध की महती भूमिका दिखाई देती है। भारतीय ज्ञान परम्परा श्रवण-लेखन अर्थात मौखिक व लिखित दोनों रूपों में उपलब्ध है। यह एक समृद्ध विरासत है, जो अनुशासन से मनुष्य को संस्कारित करती है। कर्मवाद इसका मुख्य साधन है। जैसा कि जयशंकर प्रसाद कामायनी में कहते हैं- 'इच्छा, क्रिया, ज्ञान मिल लय थे।' ज्ञान व कर्म का मेल सिद्धि के लिए आवश्यक है। कर्मयोग व ज्ञानयोग दोनों ही समान महत्त्व रखते हैं। इसमें इतिहास, भाषा विज्ञान, भूगोल, नृतत्व राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, ज्योतिष, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित आदि विषयों से लेकर समस्त कलाओं के शोधपरक आनुभाविक सिद्धान्त निहित हैं। वर्तमान शोध प्रक्रिया मात्र सिद्धान्त निर्माण तक सीमित है, परन्तु भारतीय ज्ञान परम्परा अनुभव से सिद्धान्त और सिद्धान्त निर्माण से कर्म की पूरी प्रक्रिया में गतिमान होती है। अतः अनुसंधान की चरम सीमा व प्रभावी व्यावहारिकता इसमें सन्निहित है।

संदर्भ :

1. रिसर्च मैथ्डोलोजी - डॉ. आर.एन. त्रिवेद्वी, डॉ. डी.पी. शुक्ला (पृ.सं.-24)
2. https://m.jagran.com
3. https://www.newstodaynetwork.com
4. The Hindus Newpaper Article releated with IKS
5. वैदिक ज्ञान कोश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में (सम्पादक-डॉ. मनोदत्त पाठक)

•